मायिक सुख काल्पनिक होता है। किसी पंडित के भोजन के साथ शराब रख दो तो वो उठ भागेगा। लेकिन शराबी को शराब में सुख की अनुभूती होती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हम सुख ढूंढ रहे है। लेकिन ये नही समझ रहे है कि हमारी सुख की कल्पना हमे बहुत बडा धोखा दे रही है।

क्या सुख पैसे में है? है तो कितने पैसे में है? 1000 कमाने वाला सोचता है 10000 मिल जाय तो मैं सुखी हे जाउंगा। इसका मतलब 1000 में सुख नही है लेकिन 10000 में है। अगर 10000 में सुख है तो 10000 वाला 100000 पीछे क्यों है? 100000 वाला 1000000 पीछे क्यों है? ये क्या नाटक है? हम ये समझ ही नही पा रहे है कि हमारी मान्यता गलत है। पैसा तो उतना ही जरूरी होता है जितने में हमारी जीने की जरूरतें पूरी हो।

क्या सुख सुंदरता में है? कितनी सुंदरता में? फिर सुंदर है वे मेकअप से अधिक सुंदर क्यों बनना चाहते हैं?

क्या सुख ज्ञान में है? कितना ज्ञान? फिर ज्ञानी लोग अधिक ज्ञान क्यों चाहते हैं?

क्या सुख प्रसिद्धि में है? कितना प्रसिद्धि? फिर क्यों प्रसिद्ध लोग अधिक प्रसिद्धि चाहते हैं?

तथ्य यह है कि बाहर कोई खुशी है ही नहीं। खुशी हमारी काल्पनिक मान्यता का परिणाम है।

इसलिए हम बार-बार कोशिश करते हैं लेकिन हमेशा अपूर्णता महसूस करते है जिसके कारण किसी चीज को प्राप्त करने के बाद उसके आगे की चीज प्राप्त करना चाहते है। और इसी कोशिश में एक दिन मर जाते है। ये अपूर्णता तब तक रहेगी जब तक असली आनंद जो भगवान है, वो नही मिल जाता।

सुख का रास्ता बाहर नही है। रास्ता मन के अंदर से है। भगवान